उपनिवेषवादी काल के दौरान दलित इतिहास लेखन एक समग्र मूल्यांकन

राज कुमार
असिस्टैन्ट प्रोफैसर
इतिहास विभाग
गुरूनानक खालसा कालेज
अबोहर, पंजाब

भूमिका

इतिहास लेखन एक महान विधा है और समय पर विभिन्न इतिहास कारों ने अपने–2 तरीके से इतिहास लिखने की परम्परा चलाई। जैसे समाजवादी, इतिहास, लेखन, राष्ट्रवादी इतिहास लेखन, मार्क्सवादी इतिहास, लेखन, गांधीवादी इतिहास लेखन, दलित इतिहास लेखन आदि। इन्ही सभी इतिहास लेखनों में दलित इतिहास लेखन एक नई परम्परा थी, एक नई क्रांति थी और नया जन आदोलनों का रूप था। जो यह कह रहा था कि इतिहास नीचे से लिखा जाना चाहिए ना कि ऊपर से। इन्होंने नारा दिया – भ्पेजवतल तिवउ इमसवू यह इतिहास लेखन अपनी मुख्य उर्जा ब्रिटिष शासन काल से प्राप्त करता है। और दलितों को आवाज देने का काम करता है जिनकों विभिन्न काल्पनिक और गैर एतिहासिक साहित्य में कोई स्थान नही मिला और उनकी केवल अनहैतिहासिक साहित्य में कोई स्थान नही मिला और उनकी वांचित और राक्षसों के रूप में दिखाया गया और चित्रित किया गया जबकि वे भारत के मूल निवासी थे तथा मौर्य साम्राज्य जैसे महान साम्राज्य के निर्माता थे और प्रबुद्ध भारत के हुक्मरान थे और शारीरिक, मानसिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षमता में किसी भी स्वर्ण और मनुवादी मानसिकता वाले पाखण्डियों तथा धर्ममीस लोगों से कम नही थे।

मूलतः दलित उन व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता रहा है जो वर्णव्यवस्था में सबसे निचले दर्जे के नागरिक थे जिनको शूद्र, अवर्ण, अनार्य, भूमिहीन, शक्तिहीन, सताहीन, परिअल, पंचम, अतिषूद्र, अत्यज या नामषूद्र के नाम से जाना जाता था। इनमें वर्तमान के एस सी, एस टी, बीसी, ओबीसी और धर्म परिवर्तित हिन्दूओं को शामिल किया जाता है। गांधी जैसे एक व्यक्ति ने एस सी को हरिजन और एस टी का भी गिरीजन का नाम दिया। कुछ जातियों के नेताओं द्वारा हरिजन ओर गिरीजन के नामकरण अथवा भर्त्सना के योग्य माना गया। ये अपने आपको दलित, मूलनिवासी तथा शोषित कहलवाना पसन्द करते थे। प्राचीन और मध्यकाल तथा आरम्भिक आधुनिक काल में दलितों का स्पर्ष, उनकी छाया और उनकी आवाज भी स्वर्ण हिन्दूओं को अपवित्र कर देती है। यद्यपि कानून की नजर में ये लोग अस्पृष्य नही है लेकिन आज भी ये लोग जाति के कंलक से बुरी तरह ग्रस्त है तथा कितनी भी बड़ी स्टेटस के बाद भी गांव व शहरों को केवल जाति आधारित पहचान ही काम करती है जो सारे तरह के सवांदो ओर क्रिया–प्रतिक्रिया को जन्म दे रहे है।

दलितों का सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक दषाओं पर बहुत सारे अध्ययन हुए है। मध्यकाल से ही कबीर, रैदास, नामदेव, नानक जैसे संतो ने इस समाज की पीड़ा को दुनिया के सामने रखने का काम किया ओर एक क्रांति की ज्वाला जलाई। लेकिन मूल रूप से ब्रिटिष शासन के दौरान शाहू जी पेरियार, ज्योतिबाफूले, बिरसा, मुंग, डा. अम्बेडकर के निरन्तर प्रयासों से दौलतों को एक आवाज मिलनी शुरू हुई। क्योंकि इससे पहले दलितों का व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुआ था क्योंकि उस समय यह कल्पना बलषाली था कि इतिहास केवल परम्पराएं होती है ओर केवल राजा महाराजाओं और बलषाली लोगों का ही इतिहास लिखा जाता है। लेकिन उपनिषेवादी काल में दलित इतिहास का निर्माण होने लगा और उनके महापुरूषों की पहचान होने लगी ओर उनके सघंर्ष तथा उपलब्धियों को स्थान मिलने लग गया। गूंगो को जबान मिलने लग गई। जिससे दलित अस्मिता ओर दलित अध्ययन जैसा नई विषय विष्व के ज्ञानकोष में शामिल हुआ।

दलित इतिहास लेखन के प्रमुख मुद्दा अस्पृष्यता ओर जातिवादी अन्याय और अत्याचार का रहा जो उनको सताहीन दिषाहीन तथा भूमिहीन बनाता रहा है। यह प्राचीन, मध्य ओर आधुनिक तथा समकालीन भारत मे निरन्तर जारी रहा और अकेमी अस्पृष्यता की सामाजिक बुराई ने भारत का सबसे अधिक नुकसान किया। इसके अलावा खेतीहरों मजदूरों की सबसे अधिक संख्या दलितों में पायी जाती है। राजनीतिक सताकी प्राप्ति, पूना पैक्ट की पुर्नस्थापना यानि उसका मूल्यांकन, सरकारी नौकरियों में बराबर की भागेदारी, कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधानपालिका और मीदिया तथा प्राईवेट सैक्टर में उचित प्रतिनिधित्व की मागं मुख्य मांगे है। आजादी के 72 साथबीत जाने के बाद भी आज तक कोई दलित का पी.एम. ना बन पाना दलितों के लिए एक महान और ना भूलने वाली त्रासदी है। राष्ट्रीय ओर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर दलित आंदोलनों को विष्लेषित करने कम प्रयास हुए है ओर जितना हिंदुत्व का प्रचार–प्रसार हुआ उसी मात्रा में भारत के दलित भी डा. अम्बेडकर की फोटों के साथ हिदूं देवी देवताओं के फोटो लगाने में कोई एतराज नही करते है। यह एक चिंतन का विषय है कि डा. अम्बेडकर ने अपनी प्रतिज्ञाओं में काल्पनिक देवी देवताओं को सिरे से खारिज किया तथा अपने अंतिम दिनों में बुद्ध सिरे धर्म की दीक्षा ले ली थी तथा मनुस्मृति की खिल्लियां उड़ाई थी और मनुस्मृति – जो कि एक पाखण्ड की दुकान सदियों से चला रही थी उस दुकान को ही जला दिया और यह घोषणा कि थी कि मैं हिन्दू पैदा हुआ यह तो मेरे बस में नही लेकिन मैं हिन्दू मरूंगा नही।

डा. अम्बेडकर ने कहा था कि सत्ता मास्टर की है, और तुम्हारी सारी समस्याओं के तालों को खोल सकती है। बार बार उन्होनें सत्ता के मंदिर पर कब्जा करने की बात कही तथा यह कहा कि जाओ और अपनी दीवारों पर लिखदों कि हम इस देष की शासक जमात है।

ब्रिंटिष शासन काल ने विकटोरिया घोषणा से ही भारतीय जनसंख्या को जातिगत पहचान के आधार पर प्रस्तुत करने का एक नायाब तरीका ईजाद किया था इसको उनकी साम्राज्यवादी नीति माना जा सकता है। जाति आधार पर जनगणना मण्डल कमीषन का भी अहम मुद्द्रा रहा। 1931 के बाद बी सी और ओ बी सी की

जातिगत आधार पर जनगणना न हो पाई। जिससे उनके आंदोलन और इतिहास की गति भी धीमी पड़ गई और मण्डल कमीषन की रिपोर्ट का लागू ना होना भारत के पिछड़ों के लिए एक महान त्रासदी है जिसके कारण वो गुलामी से महागुलामी की ओर जा रहे है। जबकि पिछड़े वर्ग के लोग केवल काल्पनिक हिन्दू देवताओं और त्योहारों में ज्यादा दिलचस्पी लेते है और अपना सारा समय, ऊर्जा और व्यक्तित्व हिदूत्व के प्रचार प्रसार में लगा देते है। महात्मा ज्योतिबाफूले इस सत्य की ओर ध्यार आकर्षित करते है कि ब्रिटिष साम्राज्यवाद ने ही ब्राहण साम्राज्यवाद से लड़ने के विभिन्न हथियार, तत्व, कार्यक्रम और तरीके ईजाइ किये। ब्राहण साम्राज्यवाद की जड़े हिदूं काल्पनिक धर्म ग्रन्थों में निहित है जो जाति आधारित भेदभाव से परिपूर्ण है तथा केवल ब्राहण देवत्व की बात करते है।

महात्मा ज्योतिबा फूले और डा. अम्बेडकर के प्रयासों से भारत में दलितों में राजनैतिक और गैर राजनैतिक चेतना पैदा हुई क्योंकि फूले ने कहा था कि अविद्या और अषिक्षा के कारण दलितों का सर्वनाष हुआ और वे भूमिहीन तथा संपतिहीन बन गए और धर्म को सर्वस्व मानने लग गए। डा. अम्बेडकर ने कहा था षिक्षित बनो संघर्ष करो और संगठित रहो। ओर यह भी कहा था जिस समाज की गैर राजनैतिक जड़े मजबूत ना हो वह समाज राजनीति में सफल नही हो सकता। डा. अम्बेडकर के कोभंबिया के अनुभव तथा वहा का खुला माहौल तथा प्रोफेसरों से सवांद, साउथबोरों कमेटी से वार्तालाप, साइमन कमीषन से सामना, कम्युनल अवार्ड, पूनापैक्ट, गोलमेज सम्मेलनों में प्रतिनिधित्व, 1935 के एक्ट में योगदान तथा भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने और भारत के कानून मंत्री के रूप में अभिव्यक्ति ने भारत में दलित इतिहासलेखन के लिए पुनर्निमाण का काम किया। दलित इतिहासलेखन के लिए ऊर्जा शक्ति और आक्सीजन प्रदान की तथा जिसने भारत में दलित आदोंलनों के लिए महान कार्यक्रम और विचारधारा दी। उपनिवेषवादी काम में प्रषासन की नौकरषाही, न्यायपालिका की दखल अंदाजी तथा संचार के प्रचार प्रसार के कारण भारत के दलितों ने विकास की नयी परियोजनाओं का लाभ उठाया जिसने वर्णव्यवस्था और ब्राहणों निरकुषलता को झटका लगा। वेदों को अपवित्र माना जाना लगा। मनुस्मृति और पुराणों को खारिज कर दिया गया तथा काल्पनिक पाखण्डों ओर षडयन्त्रों का पर्दापाष होने लगा। ब्रिटिष पष्चिमी बेथंम की उपयोगितावादी विचारधारा से प्रेरित थे तथा बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की परम्परा को कायम करना चाहते थे।

ई.वी रामस्वामी पेरियार, शाहू जी, ज्योतिवाफूल, डा अम्बेडकर के प्रयासों से दलित इतिहास निरन्तर गतिषील रहा। क्योंकि ज्योंतिबाफूले ब्रिटिष साम्राज्य को न्यायप्रिय तथा ब्राहण व्यवस्था अन्यायप्रिय तथा असवैधानिक और अमानवीय मानते थे तथा इसलिए वो अपनी समस्याओं की षिकायते ब्राहणों को प्रषित न कर सीधे अग्रेंजो को सूचित करते थे। इस प्रकार भारत के इन महापुरूषों में एक भविष्य की गहरी समझ थी जो कि भारत में एक ऐसे इतिहास से विकसित समाज का निर्माण करना चाहते थे जो कि समानता, स्वतन्त्रता, भाईचारे ओर न्याय जैसे मूल्यों पर आधारित हो। आज के पी.एम कहते है कि कचड़ा उठाने में आघ्यात्मिक

सुख मिलता है, बड़ी शर्मनाक बात है। लेकिन आज के वैष्वीकरण ओर उदारवादी विष्व में दलित इतिहास लेखन विष्व के सामने थे प्रष्न उठाता है कि दलितो के लिए यह जानना सबसे महत्वपूर्ण है कि जिन महापाखण्डियों ने तुम्हें शूद्र, अघूत, नीच, ढोर, गवार, भूमिहीन, शक्तिहीन, संपतिहीन घोषित किया तुम उन्हें पूजनीय क्यों मानते हों। जिन्होनें तुम्हें सारे मानवाधिकारों से वंचित किया तुम उन्हें पूजनीय क्यों मानते हो और जिन्होनें तुम्हे सारे मानवाधिकार दिलाये आप उनको पूजनीय क्यों मानते हो और आपके घरों में उनकी फोटो तक नही मिलती है। कुछ बाते आरक्षण के बारे में भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ क्योंकि आजकल कुछ असामाजिक तत्व आरक्षण का विरोध कर रहे है मैं उनसे पूछना चाहता हूँ –

1. आप बताइए देष आजाद होने के बाद कितने आरक्षण वाले व्यक्ति देष के राष्ट्रपति बने।
2. आप बताइए देष आजाद होने के बाद कितने आरक्षण वाले बैपमि श्रनेजपबम वि प्दकपं बने।
3. कितने प्रधानमंत्री आरक्षण के कोटे से बने।
4. कितने चुनाव आयुक्त आरक्षण के कोटे से बने।
5. कितने आर.बी.आई. गवर्नर आरक्षण कोटे से बने।
6. मण्डल कमीषन की रिपोर्ट कब लागू होगी।
7. मूलनिवासियों की जातिगत जनगणना कब होगी।
8. आरक्षण से कितने दलित बॉलिबुड में गए।
9. आरक्षण से कितने खेल जगत में गए।
10. आरक्षण से कितने बीसीसीआई में गए।
11. आरक्षण फायदा लेने वालों ने कितने स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी और विभिन्न प्रषिक्षण केद्रं खेलो।
12. आरक्षण से कितने राज्य ओर राष्ट्रीय विष्वविद्यालयों के कुलपति, उपकुलपति, रजिस्टर और प्रोफेसर बने।
13. भारत के कितने मूलनिवासी कारपोरेट घरानों के मालिक है जो विष्व की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते है।
14. अगर ठसंबा डवदमल वालों की स्पेज देखे तो उनमें कितने दलित है
15. कितने दलितों ने व्रतों, उपवासों, तीर्थयात्राओं तथा काल्पनिक देवी देवताओं को मानना छोड़ दिया।
16. क्या ज्योतिबाफूले और डा. अम्बेडकर के अनुयायी सही में संघर्ष कर रहे है या संघर्ष की केवल परिकल्पना तैयार कर रहे है और केवल छोटे–छोटे पदों को ही टॉफी और चॉकलेट की तरह खा रहे है।

इतिहासकार का मुख्य कार्य वर्तमान की आंखो से ओर वर्तमान की समस्याओं के संदर्भ में अतीत को देखना है। इतिहासकार केवल शब्दकोष की रचना नही करता यानि केवल विवरण नही देता बल्कि उसका

महत्वपूर्ण कार्य तो उस व्यवस्था का मूल्याकन करना होता है कि पुरानी रूढ़िया और रवायतों का कोई वैज्ञानिक आधार भी था या केवल इन्सानियत को गुलाम बनाने का प्रषिक्षण दे रही थी।

त्मितमदबम

- ।उइमकांतए ठण्त्ण ;1936द्धए ।ददपउंजपवद व ि बेंजमए श्रंससंदकंतरू ठीममउ च्ंजतपां च्नइसपबंजपवदण
- ।उइमकांतए ठण्त्ण ;1916 ख्1936,द्धण ब्ंजमे पद प्दकपंरू जीमपत डमबींदपेउए ळमदमेपे ंदक कमबसंतचउमदज
- ब्वचसंदकए स्ंदए 1973 ष्जीम डींतंर व िझ्वसींचनत ंदक छवद ठतीउपद डवअमउमदज 1902.10ष्ष डवकमतद ।ेपंद ैजनकपमेए
- ळनतनए ळवचंसण ॅवसंण्श जीम स्ंदहनंहम व िक्ंसपज ठीनरंद च्वसपजपबंस क्पेबवनतेमण्ष्पद क्ंसपज प्कमदजपजल ंदक च्वसपजपबेण् म्कपजमक इल ळींदेलंउव ीीण छमू क्मसीपरू ैहम च्नइसपबंजपवदेण
- न्पीए झ्ंदबीं 1996ण ष्ील प् ंउ दवज ं ीपदकनरू ।ैनकतं ब्तपजपुनम व िभ्पदकनजअं ब्नसजनतमए पकमवसवहल ंदक चवसपजपबंस मबवदवउलण ब्ंसबनजजंरू ैउंलं
- झ्नउंतए भ्ंतपी 2017ण क्ंसपज डवअमउमदज पद उवकमतद प्दकपंए बिंदकपहंतीरू ैचंजतपीप च्नइसपबंजपवदेण
- व्उअमकजए हंपस ंदक चंजंदांतए ठींतंजण 1979ण ष्जीम क्ंसपज सपइमतंजपवद डवअमउमदज पद बवसवदपंस च्मतपवकष् म्बवदवउपब ंदक च्वसपजपबंस ॅममासलए 16;7 ंदक8द्ध ।ददनंस दनउइमतण